

विद्यापति : पुनर्मूल्यांकन

17051

19-8-15

प्रधान सम्पादक

श्री दीनानाथ का

सहाय सम्पादक

श्री रामेश्वर का

सम्पादक

श्री हंसराव



प्रकाशक

मैथिली साहित्य संस्थान

पटना

[मूल्य नीचे रुपया मात्र]

विद्यापति : पुनर्मूल्यांकन

१६

17051
19.8.15

सम्पादक

श्री दीनानाथ का

सम्पादक

श्री राजेश्वर का

सम्पादक

श्री प्रेमराज



प्रकाशक

मैथिली साहित्य संस्थान

पटना

[मूल्य तीन रुपये मात्र]

विष्णु स्तोत्र : हिन्दी



(C) प्रकाशकान्वित

मुद्रक
श्री कायेश्वर प्रसाद
काठिन्य प्रेस, नार्विकुमार नगर
नरसिंह—५

मैथिली साहित्य संस्थानक

कार्यवाहिनी समितिक सदस्य

संस्थापक :

श्री लक्ष्मीशक्ति सिंह

समयक :

श्री दीनानाथ झा

सहायक :

डॉ० अटारशंकर झा

श्री गौरीशम्भु सिंह

सचिव :

श्री राजेश्वर झा

संयुक्त सचिव :

श्री गोपी राम चौधरी

मिथिला-भारतीक संपादक मण्डलक सदस्य

मुख्य संपादक :

डॉ० जगदीश चन्द्र झा

सहायक संपादक :

श्री राजेश्वर झा

सम्पादक मण्डल

श्री सुभाषु शेखर चौधरी

भाषायाँ श्री कामानन्द राय

श्री कुलानन्द राय

श्री सुरेन्द्र मिश्र

श्री० हेतुका झा

डॉ० लेख नाथ मिश्र

डॉ० इन्द्र कान्त झा

प्रथमः

‘विद्यापतिः पुनर्मुखाङ्कन’ आनेक ह्रास मे अस्ति । स्वर्गीय डॉ० अमर
नाथ साहू विद्यापतिक प्रसंग गण्य करैत ई निम्नय मेरु ह्रास जे विद्यापतिक
काव्यकृति एवं व्यक्तित्व पर अधिकारी विद्वान्श्रीकनि सौ, मुख्यतः अशुनिक
दृष्टिकोण रक्षितहार जन्मापक बर्ग सौ, निम्नय लिखदाभीष्ट जाए जा सै
पुस्तकक रूप मे प्रकाशित हो । अमरनाथ साहू चक्र गेछाह आ बाबु पुरना
गेल । केर विचार मेरु जे प्रवास कएछ जाय । अतः आइ सौ तीन वर्ष पूर्व
हमरा लोकनि राजाचार आरम्भ कएछ । निरन्तर प्रवास कएछा पर जे निबन्ध
कपटक अथ सकल सै अपने लोकनिक समग्र पस्तुल कयल अस्ति । जे अमर
नाथ साहूक जीवन कास मे ई काय होएत ई हुनक निबन्ध अवरुध भेटैत ।
अन्तोग्रथने जे आदित्य साहूक निम्नय भेटि गेल ।

निबन्धकारलोकनिक प्रोते हमरालोकनि की आमार प्रकृत कक ?
स्वदीप वस्तु गोविन्द तुल्यमेव समर्पितम् । हमरालोकनि सँ संकलमिता मात्र
की । अथापि दृष्टिसे निबन्धकारलोकनिक रचनाकार केँ अन्त मे राजक गेछ
अस्ति ।

संकलनक प्रकाशनक हेतु हमरालोकनि मैथिली साहित्य संस्थानक
आमारी रहल ।

बदि एहि प्रकाश सँ विद्यापतिक काव्यक सभ पुस्तक निरा मे
विशेषप्रकारक एवं आलोचनात्मक दृष्टि जरण मेरु सँ हमरालोकनि अपन
बस केँ आर्जक मानल ।

पटना, विद्यापति स्मृति मर्म,
२२-११-१९६६

श्री दीनानाथ सा
श्री राजेश्वर सा
श्री हंसराज

विधापति : पुनर्मूल्यांकन



स्व० डा० अमरनाथ झा

(जन्म—१८९३ ई० : मृत्यु—१९५५ ई०)

विश्वविद्यालयप्रमुखः मुक्तचर्चितः

समाजसेवकः श्रद्धालुः विद्वान् ।

समाजसेवकः साहित्यप्रवर्धकः

प्रसन्नमानसः सदा सदा ॥

'कर्मणि, यत्तदेवेत्यादिमस्तत्प्रक्रियाविशेषनाय श्रीमहादेवरीवरदाय-
 म्नायमवालीमवसक्तिशायनायरायवरुणारायभमहारादायराय श्रीमहादेवरीवरदाय-
 देवपदायः सप्तविंशतिनी वरैरुत्पन्नाया विस्तीर्णामवास्तव्यसकलतीक्ष्णमुकपंकजिभ
 सभादिषन्ति । शतमस्तुभवात्तम् । ज्ञानोन्मेषहन्निः शयनिकामभनमनदेवकहासाय
 यन्त्रिपुस्तुष्ट श्रीविद्यापतिभ्यः परमनीकुलप्रभवतोऽष्टोन्नमोदेवसेवकनरुवीभूतकर्मभाविर्
 कर्मकरिभ्योदेति । म. म. २१३ भागवतमुदि सप्तम्यापुरी ॥

श्लोकास्तु

कथं सत्त्वगनेनपुपतिमने भक्तिप्रवृत्तवाङ्मने,
 भावि व्यावचसंज्ञके सुनिविष्टौ गते भवतो पुरी ।
 वागव्याः शरितस्तटे गजरवेत्याक्यरगिहोपुरे,
 तिस्रोत्थान्-विष्णुशक्तुसकः सध्याय मध्येसप्तम् ॥१॥
 इत्यावात् यत्पुरोर्बेरुत्पुष्टदासीनं मयोनासुचम्,
 सारव्यं मरुदीवरं विस्तीर्णाम्नामवालीमतः ।
 श्रीविद्यापतिवर्धने मुकजये वापीरामास्वारविद्
 श्रीः श्रीविद्यापतिवर्धनेपुतिर्गव्यये वातावनम् ॥२॥
 देन साहसमदेन शक्तिभया मुक्तवाहवरपुष्पमतिगार,
 कर्मवर्तिभक्त-रोर्ध्वविर्गव्यवनामिभक्तिगीहसुभवात् ॥३॥
 शीघ्रदूतं पुनः कर्मवर्धनेना मयेत्यथ इव श्रीवक्तव्यनी,
 कर्मवर्तिभक्तवर्धनकामस्यां म्नामिभक्तिविश्वोद्धारणात् ॥४॥
 विष्णुपुत्रविश्ववर्तिनीर्ध्ववर्धनादिनीकोटिभिः ।
 प्रतापवर्धनसुखे कर्मवर्धनेदिनीन्नाविता ।
 सुमन्त्रहरिद्वज्याविभुसारावास्तुः दायः ।
 विष्णुप्रमदराज्यदुरं भवति येन सत्त्व मया ॥५॥
 मनाङ्गवरपदमः कर्मवर्धनकर्मपु मस्तुना-
 पुस्तवमर्धवर्धने विवर्धने विता शक्तिः ।
 ज्ञानाति च साहसमना भवति येन दूत-
 दूतः यत्तदेवेत्यादिमस्तत्प्रक्रियाविशेषनाय ॥६॥

नरपतिकुलभान्यः कर्णक्षिमावदान्यः परि-

धितपरमार्थो दानगुष्टाधिसाधो ।

निग्नचरितपरिचो देवसिहस्पृष्टः ह भवति

त्रिवसिहो वैरिनासेन्दविहः ॥७॥

धनो बृहन्नममुष्णिन् निरुपिन्पतयो हिन्दतो वे

तुल्यता श्रीकोपभारममैः सहितममुदिन-

मुञ्चते से स्वधर्मम् ।

ये चैतदग्रामगतं नृपकररहितं पाद्वन्ति प्रताप-

स्तेषां सत्कोत्तिगाया दिति दिदिमुत्तिरंतीयतां वन्दित्वन्दैः ॥८॥

—ताक्षपञ्चक मयिमेक

विषय-सूची

१.	विद्यापति का काल-वैयक्त्य		
	डा० श्री भादिराज नाथ झा, बा० प्रो० ए०	—	१
२.	विद्यापतिक साहित्यिक कविता		
	प्रो० श्री जगन्नाथ जगन्नाथ मिश्र	—	१६
३.	विद्यापतिक विवेचना		
	प्रो० श्री जगन्नाथ जगन्नाथ	—	२४
४.	विद्यापति का काल ऐतिहासिक पृष्ठभूमि		
	प्रो० श्री राजकुमार श्रीवास्तव	—	३०
५.	विद्यापति अनुपाय		
	प्रो० श्री जगन्नाथ झा	—	४०
६.	विद्यापति किन्तु कविता के गुणों के विविध रूप		
	प्रो० श्री रामचन्द्र झा	—	४९
७.	सहायक विद्यापति साहित्यिक सूत्रांकन		
	डा० श्री बंकर कुमार झा	—	५५
८.	विद्यापति का साहित्यिक व्यक्तित्व		
	श्री हरिहर झा	—	६१
९.	सुमधुर साहित्यिक प्रयोग		
	श्री श्रीवास्तव झा	—	७७

विद्यापतिक काव्य-वैदग्ध्य

सौ० श्री आदिस्वनाथ झा, भाद० सो० पृष्ठ०

विशिष्टात्मा गर-वाचन बाद बाद पट-वन्दित, यहाकवि विद्यापतिक सबसे सुखिल और अति । अथ अथिक वापुस सग के अभावसे। पर्यन्तक गर और दारी एहि पद-सबके अपन जोवनक, लख धनक मधुर-कोमल सुरत चितक रूपके देखैत छथि ओ पुन-पुन प्यलीत मेनसु उतर एहि पद सबहुक समस्तक अद्वितहि जाए रहल अछि । विद्यापतिक गन लोकक कंडहार पिक । बाग-हिराचन भूमि पे बसल लोकक धामस हिनक परमेक पदके कण्ठ मे बसबाने जोबित रहैत आएल अछि । वसन्तनिब क अवस्था मे बकिला बाना, लगनमगिले बबिला लछी, रतिक भुबामे बछ कामिनी, बसक मीठाबस्त्रक दीप्त कल्ले बाबैकिता पहिला—सब केओ हिनक वचन स्वर ओ कन्दक हथीमे बाइयो मारे जोड़िना सेमावक-कण्ठनित होवत छथि केना भवता विद्यपतिक अतिवचन रानी राजरानी बलिवा होइत रह्योहु होएत । कागदक मजसे पैच लिखि दएत पिक के लोकमानस गय लखीवन ओकरा बोन प्रकारसो इच्छनिधि बनाए लखैत रहने अछि । यहाकायक विरार रचनक अपन परंपरसो पुनके पदवान् पुनके प्यल करैत आएल अछि किन्तु एहि मैथिल-कोकिलक बाणी बनिधिलस ओ अम्याहुत पियनाक वचनमे सुखित होइत रहल अछि । ई वाली एते कालविचरिनी अछि ।

एहि लोकप्रियताक कारण पिक विद्यापतिक काव्यक सर्वाङ्गिय सामग्री । सबन काव्यक उदाहर करैत अहुकरी ई कवि महकवि कालिदासहुक समान स्वीकृत एने छथि के—

कालचक्र विजयामय जगता ।

हुत कहु लखन पुज्यन हुता ॥

ई आदखोप केवल रूप (Subject) ओ कविक (Form) अछि, अमुक हुक काव्यक अति (Content) सौन्दर्य (Beauty) ओ मर्म (Sentiment)क समताक बोलक पिक ।

जीवनके विद्यापति सम्पूर्ण अनुपम सम्पूर्ण सुखित देखैत छताह । एहि त विद्यापतिक काव्यक सर्वस्व तीव्र अछि । अनुपमके वैदिक कथनन पर अति

कुम्हारि कलविहू यहु कर ना ॥
 यहु विन तवि सब कर कर ना ॥
 भद्राधु लागु परम कर ना ॥
 कसै छवि फाँद राहु कर ना ॥

एतए चन्दना को बाराक चम्पा बहल्ले के कटुमा को राहुक उपमा कए देल गेल अछि
 मुदा व्यापकता निमित्त अछि

संभवा बहल्ले जामाद नितिनिक मोर ।
 सवले बननन अछि करीद ॥

एकरो चित्रनाथ कोणहु अछि ।

विद्यापति कवन कवियों केके अत्यधिक प्रभावित करने छलै । मुख्यतः
 बहुरूपी विद्यापतिक आधारों युक्त नहि छलै । गद ह गीत उदाहरण प्रदर्शित होएत
 विद्यापतिक एक अछि—

गुह बिग बाहु दाम कासो उषस आहुत कोर मंगल
 दिसन बानस होनि गुणायन अछि विद्यापति नाम ।

गद उपमा रचनेछि

कवन सम्बद्ध एउ कोरि स्या भौतल्लताहि चहै
 सुरदास अछि किछु विरहिनी कोधु सुखस सहै ॥

गुन विद्यापतिक एक अछि—“न रम नयन बसत पुनि मरि” इत्यादि नयन शायक
 दूरक “बारागनसर” कहु गद अछि । एता गुर विद्यापतिक अनेकानेक उपमान,
 उपमा, को बराबर एतए प्रत्यक्ष अछि भेकर । एतेक एतए प्रमाणगत शान्त

दुखी राधिककेँ दसमहि देखन गयन विद्यापतिक शब्द के कृपा के कायक
 संवाद केल अछि को नामक अछि

सकल माछ करु सम्बद्ध है बेजान छनि रेहु ।
 सब जगद कर पंजर है अनु बाधनि रेहु ।
 बाध बेजान अछि बाहुत है मोहि समझन देन
 कनकमाला अनु पंजर है नहि मिर भवतम्ब ।

एहि के उदाहरण देबोह अछि, सब जानको विरह कर दैल अछि, बाध प्रत्यक्ष
 समझ अनम भाव अछि । एहि सहजता विद्यापतिक वाक्यक वाक्य अछि । दूर
 कोरि कवन बसंत कोरि गहिना देन अछि । मुख्य एहि अछि के लक्ष्य वाक्यक
 नय नहि, किछोद काव्यकाल विषय साथ अछि

तिरिचः नमः श्रीं नमः विधाना

निम्नलिखित व्यक्तियों की संज्ञा दीजिए।

सिद्धिदा श्रवण मन्त्र दोम्ह हे विद्याता

नानि कृष्यसे मेह ॥

[illegible]

मन्मथजी, तुम सबकी ही मन्मथोंस ।

बैशाख मास शुभेष्ट वर्षी नवरात्र साम्यह सप्त ऋतु होय ।

विद्यार्थियों को दोष के भ्रम के अन्तर्गत भी कृत्रिम करने की आवश्यकता अनुभव नहीं होना चाहिए।

अथर्ववेद कोमल-कण्ठ वराचनो मे सोम-रश्म मे अग्नि निम्नु मंडहि मे
समोषिकता होहो अग्नि तथा भौतिक परिवेश का बहु बाल्मिक करालान मुद्रा कर्षित
अग्नि वना कोन्हु प्रकाशक अथ पति जैक किन्तु विद्यापतिक राधा जो कृष्ण-
चिन्तन को दिव्योत्क भगवत्पद स्तोत्र संग मे अग्नि, कोहि परिवेश मे मे आहवा
पिबिलाक राग-राग मे बलैमान अग्नि । लोकजीवन मेना रसक उपभोग करैक अग्नि
मंडितन विद्यापतिक राधा जो कृष्ण मेतु कर्षित छथि ।

[illegible]

अस्मिन्निह वारम् अस्मिन्ने ।
 ह्येवम् ह्येवम् ह्येवम् वीर्याम् ॥
 विष्णुम् वारम् अस्मिन्ने ।
 अस्मिन्निह वारम् अस्मिन्ने वीर्याम्
 विष्णुम् वारम् अस्मिन्ने ।
 अस्मिन्निह वारम् अस्मिन्ने वीर्याम् ॥

જાણકારી અધિકાર અધિનિયમ અન્વયે માહિતી માંગવામાં આવેલ છે—

येन निवारयितुं बहु समाचारः ।
अन्ये नान्यं यत् किञ्चित् शिरसि ॥

महान् शायक के" केवि कायम् कोना धुञ्जित भवि शिष्ट
 लसत वरस शम्भु लम्बा रे लेखन कवि वेह ।
 लव ललकलता लीला रे लघु लालिनि रेह ॥
 महजति भुम्बा लालन रे लीला लुनेलति भवि ॥ इत्यादि

एलोरा सहज साध एवं जीवनसंक शिव अंकित दण्ड्याक कलेक कवि के शास्त्र
 योगमैत्रि

पुष्पकदम्ब वन विराजयति च भावने भव्य एतन्निह । कृष्ण के" वनि राधा के" करीत। कीर्ति।

॥ भगवान्मुक्ताय नमः ॥
॥ भगवान्मुक्ताय नमः ॥

॥३॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
 श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
 श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥

जो कभी में नहीं बन—
 सामर सुन्दर में नहीं आगल
 में हीर सामर हीरही ॥

क्षेत्रीय मन्त्रालयाक विद्य विद्यार्थि अङ्कित करण । ऐतिहासिक कालक
मन्ये मेरा जैन विद्यापतिक काव्यक पूर्वगत ओ जातता से समस्तनि सँ चिरह्वी
करि मुखरी आरोग्य गहर भव-विषय बिनु दीर्घात्मक अनुभवमे सम्भव नहि भए सकैत

एक विधि है प्राकृतिक और धार्मिक ज्ञानार्थक पराकाष्ठता धार्मिक आराध्य शक्ति, दोस्त
विशिष्ट है कार्यात्मक क्षेत्रों में ज्ञानार्थक रूप में प्राप्त किन्तु परिणाम नहीं देता ?

नामान् यन्त्रं यथाकृच्छ्रं भुवि नहि स्थापयन् ॥ ६ ॥

काटे लकड़ों से लकड़ों पर धातु के बने हुए हैं। इनके गंधकाकार के दो दो स्तर
धातु से लकड़ों पर धातु के बने हुए हैं।

‘दीनदत्त नाम धर्मदत्त भूय वर्तते— से वेदिक साधन कायदा सुरक्षित ।’ यह सब
क’ कृष्ण किण्वक धुसुधु ?

[illegible]

मन्त्रि ते तुमह कुलकं महि ओर
ई या भादव माह मादवं शुभ मन्दिर योज ।
सन्धि यत्र वरजन्ति सगल सुखन भव वरसन्निधा ।
लिखित विगमन ओर यामिनि अचित विष्णु यो योनिता ।

महा विमि श्रुतः विरहस्य च समा कल्पनातिशयः यत्किमप्य करैत सखि संसार विधि
नाह भून्दयं श्री सुन्दरललिता पराकाशस्य गरभसुवि वासस्य सखि । माय श्री माया
कल्प श्री विमलस्य स त्वाक नरिणीति तत्त्वस्य समी दनस्य सखि । विरहस्य परात्मन
विद्यामयिक काव्य ये गङ्गी भूमि पर आर्य, कोयल कर्मान लोभ वि नहि

५. पुरातनता मए जाल्ले २ श्री विमान न २

इसका नामा राधाकृष्ण विद्या-प्रकाशनाक प्रति की' वर्ष १९५५ बरिस—

प्राप्त्यः केवलम् विद्येगिनि आमे ।

अथर्व वे अथर्व चित्तास सङ्गीत गंग कान्तिनि जय सुख माये ।

सत्यमेव जयते—

सादरमार्फत आपका आभार व्यक्त करता हूँ।

हाहुरि हाहुरि कफिरुहि बेरि-बेरि ।

अथ कथं ज्ञेयं तदवस्था ॥१॥

विद्यार्थिका कृपयां केन्द्राः नहि क्षामन्व मनुष्य एषि । को राधा कं बोध-
ज्ञानक प्रसाद शक्ति पठितैः चापन्तु । मुनि संज्ञात् हेतु निद के पठितैः प्रामन्ता हुनको
स्वप्ना कवि के नहि विसारैनि—

१५ रामदास के विषय में निम्नलिखित बातें हैं :-

विशेष विनाश करक आशुष्य इत्यम विष्क । देह के पक्षेयुक्त कर्णनहार
 केदुप अनन्य तीक्ष्ण ये कल्पक कदम्ब वेद्य ज्ञानि नारी प्रकाशक देह विराट्कक मयन
 ज्ञानि । करक आशुष्यक विष्क अति आशुष्य हैं कल्पकी हने ज्ञानि विराट्कक के
 मयु अति कर सकने, आशि करके, अति आशुष्यक-ना ये जीवकक कान् कदम्ब
 मुक्तक ज्ञानि

अतः विद्यालय शिक्षण कार्यसर्वेदात्मक नहि सन्निहित समीक्षक वृत्तर किन्तु निवेदन पर पट्टीयम सुगम भवति । नगरस्थ पञ्चमे ये विद्यालय विभाग सौ विद्यालयनिक कार्य पश्चिमुखे क्रियन्ते स्य सः शास्त्र, वैदिक भोग, लोक जीवन मे स्त्री-पुरुषक कामस्य चण्ड-व्यवहार आचार, विराह, विरहक ददना इति भोगक संशय—विद्यालय कोनहु एव के नहि आचार, सीजनक पूर्णताक को सीजनकार सत्तातः । काय-आय कसिदासहक संशय के चकारा नयवा हिमक सर्वदाय्य सन

[illegible]

निधायतिक शृङ्गारिक कविता

શ્રી ૦ શ્રી ચમત્કાવ્ય સભા ૨ સિત્ત

कविना वा काव्यं ह्यपरा लोकाभि र्के आनन्द प्रशान्ति र्वापि ।
 आनन्द ई ते जो हृदय लोकाभि र्के । अतएव प्रतीक होइय जो जाकिर वासुधै कुमार अन्तर
 मे । वाहि वस्तु के वागवत चरैय जो वस्तु विषय काव्यक रस । कावे काव्यक रचना
 करैत छवि जाति मे चन्दना श्यामला पुष्पाकृत पाविनी लसयानिख अपर गुञ्जन,
 जायक वासिकाक राज-विभाग अनुपम मुख किन्तु बहैय किन्तु काव्य रास मे बहैय
 करवाक छवि । अतएव उदाहरक प्रदान कयल काव्यक जोहनी गति बगव
 पवन वाहि अथवा गुञ्जन बहैय वायक-न विजाक रति पढ़ैत जो चिक रस । रस कयल
 बहैय ? "रसो वै स" । वागवत रस स्वरूप छवि । अतः के सुखद सदाह रसिक
 सब भिक नहि । अतएव अत्रत्य सब के अधिकत रसिक घेहलहु । श्री अकारक रस
 के जाहि रस सब मे बहैत । काव्य गति मे अनुपम परिपूर्ण अनुपपन्नक दिकस,
 वाहि री वेग वेग री धकि वा धकि री लोकक वागव

कानन को पिन सन्मुखक प्रह्लाद संस्कार । कृष्णक कोटि न कर्मप्रतिष्ठित
 अथक बन्धन में कर्म आहूत रहिषु । अंतर्गत धृष्टं मे अस्तित्व मूर्त दक्षिण धर्म
 अक्षय लोकान नया तेनक लयन जो अक्षि अक्षिमे" दक्षक. शृंगीक अक्षयन नर
 पुनक लयनोदु—अक्षयक पुन अक्षय मे निरक्षयनीक अक्षु दक्षक अक्षि, अक्षुक द्वार।
 कानक लयन आहूत रहिषु कक्षक—“आगु हे आगु अक्षय अक्षि मेले।”
 लयन लयन मे अक्षय कृष्णक अथक पुन मे नरक अक्षयनक अक्षय । अक्षयक
 अथक अक्षयक अक्षय-अक्षि दक्षक-अक्षि मे अक्षयक एक अक्षयक अक्षयन मे अक्षि अक्षय
 मे आहूत अक्ष अक्षयक अक्षय, अक्षयनक अक्षय अक्षय मे, अक्षि अक्षयन मे अक्षय
 अक्षयक अक्षयनो अक्षय ।

[illegible]

શિવિલાસ શ્રીમદ્ શિવિલાસ ભગવાન શિવિલાસ સંસ્કૃતિ એ પણ સિવસત્ત્વ
કાલ શિવિલ નમિ દર્શન કાલ ભગવાન ને" નર-નર્ય કમ્ય દે, સત્-સત્ત્વ પ્રાપ્ત દે પ્રકાશિત

[illegible][illegible][illegible]

हेमचन्द्र कवि मोक्षनिर्देशक सागर। ये एक अराध्य निःश्रेयसक वर्णन
काम्य कवि वास्तव में जीव ध्यातक संत। कवि एक अमृत विराट्

Q. "Should never die young in a perfect beauty."

विद्यार्थनिक रागाद वारणस्ये तत्तु ज्ञापये नीत्यर्थे सुखि कामिनामक मन्त्रमे
 "नृष्टिरष्ट द आटु ॥" निष्ठाभाक ज्ञाने नीत्यर्थे सुखि कामिनामक मन्त्रमे
 कन-मन्त्रमे "मिनामिने इति ज्ञाने सुखि । आद्य-मन्त्रमे ज्ञाने सुखि । सुखि कामिनामक
 मन्त्रमे सुखि कामिने इति नीत्यर्थे सुखि कामिनामक मन्त्रमे सुखि कामिनामक मन्त्रमे
 मन्त्रमे सुखि कामिने इति नीत्यर्थे सुखि कामिनामक मन्त्रमे सुखि कामिनामक मन्त्रमे
 मन्त्रमे सुखि कामिने इति नीत्यर्थे सुखि कामिनामक मन्त्रमे सुखि कामिनामक मन्त्रमे
 मन्त्रमे सुखि कामिने इति नीत्यर्थे सुखि कामिनामक मन्त्रमे सुखि कामिनामक मन्त्रमे

अथवा अतीवदुर्लभ अथवा अत्यंत दुर्लभ अथवा अत्यंत दुर्लभ अथवा अत्यंत दुर्लभ ।

क्याब नरुन हँरि क्राफ्ट क्राफ्ट धरि नरु धरि हारु क्राफ्ट

ब्रह्मण्य ब्रह्मस्य भर्तृवि ब्रह्मदेव विष्णोर्व्यास सुतु स्यान्निहि कथा

[illegible]

“बोले सन्धिपुत्र बोले संध्याभंगल कालर सन्धिपुत्र सन्धिपुत्र”

[illegible]

तब बकायक काकायक कश्चित् रायचक अन्तर्गतियम वेष्ट—निर्लेखिनी बराच
 नति ही पचातिन होइत बाल—राकाय गुरुगामी—गुरुध पन्थक तनु—बराचकाय मे
 माथके फल पत्र काय बालि के गल निश्चय अतिथीन खानेक दयाल वि कश्चित्कायक
 होइत बराचकाय । काय बालि भव लोड यति प्रियतमक सुत पचायक बालि ही निश्चयक
 बकायका कायक विषय के निश्चयक होइति बराचकाय— ३ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥
 १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

¹⁰ "तावन्मयावाप्तस्य धनमिदमेव। तदाचैव स्वयम्भूतिरिति।"

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीगणेशाय नमः ॥

विद्यार्थी विरह एवं लिंगक क्रुद्ध वर्णन अनेक पद्य में काएल अछि । पाठक श्री कृष्ण गोविन्द शर्मा के "आत्मजन्मक मे खोजि के" कहि साबित अछि । निरहु बेदना कु' म्याकुन मायिका अपन हृदय व्यक्त करैत रहैत छनि—

एक समय सवि सुतस्य हे
आत्मन आत्मन निनि धोर
न आत्मन कति नय रीति निन हे
विश्वरूप आत्मन धोर

✕ ✕ ✕

अथु विष्णु देवी पति धैर्यमभीष्टम् ।
 पुत्रिणम् न मेने धोरी मिदुर बोधिम् ॥
 आद कले विष्णुम् आदिपुत्रम् नमः ।
 पति आद नमः ते देव्य आदु ॥

सम्पूर्ण धृष्टि के आनन्दीयता के लक्षण चिन्तनीय गणक हृदय में अनुपपन्न
 तृप्ताक २ एहि विमल का लक्षणगिरि को ? चमत्कार एक के विरहकर्म के हितक दक्ष
 करीब क्षिति ? विमल-ताम्र में हृदयम कर्मकाक हृत्तु गति कर्म रम, धन्य स्वर्ण चरण
 नृपयोक मध्य रति के निमित्तक विह्वल मीनकर्म अतना कन्दन कष्ट उदैल । तबने
 प्रेमिकाक अन्तर्दृष्टि को अन्तर का उदैल—

“कवि हे सुखर पुष्कर मणि ओर
 हे पर आनंद आनंद आनंद तुम अभिमान नोन”

महिं बध्मस्य मे न विना (वर्गीकृत) सन मे वि विना न देय मे विनाय विना
के" अति मे-वह । अथ च-अथ को विना : अथ अथ विना नहि देय । "

‘निजा विषयस्य सर्वेस्य सुखस्य विभीषिनि
अप्यस्य कण्ठस्य आस्य सस्य विषयस्य
सर्वस्यस्य केवलस्य अस्मिन्नि कस्य
अस्मिन्नि सुखस्य आस्य सस्य विषयस्य ।”

In the dark night of the soul comes Krishna to Radha. In the midst of a physical passion (विश्व) temporary love is for ever transformed into the new state of pure love is eternally established. विश्व क दावानम मे वासना अन्य वीर्य वदा मेह वल्लो विशुद्ध वीर्य पुष्पितम् ॥ १०॥ विश्व विश्वी वरपितु विश्वः "

“अनुजितं भाषयन् भाषयन् सुमरद्भुतं
 सुन्दरि मेति मयापि
 श्री निवे सद्यः सुमयापि निरुदयः
 मयमे पुनः सुमयापि
 मरधय मरधय मोहद निवेह ।”

[illegible]

विद्यार्थिक शृङ्खलित कवितः ये प्रचुर प्रेम-प्राप्तं भवति सन्ति। ओपरा हृष
कामुह्यः भक्ति कवि सकोट्योः। तुम्हें से आगे अन्तर अक्षि नलका अन्तर नलका अन्तर
कामुह्य प्रकृतिगत मानवोः यन्त्री भवति। युवतीक सीतल कदाचि पात्रित भक्ति भक्ति,
आकाश मृदु पशुर हृष्य ये मनः पशक एव सादसा उत्पन्न करिषु। बाधर दिशि अन्तर
लोपयि कदाचि काथा अन्तर एव भाषा अन्तर मे तुम्हो जीविक सक्षीय भव्य
कामिक सीतल के लज्जित प्रभुको गुं एव बाधक गहन विष हृष्य हृष्यक सत्यरस
काम्य भाषा के लज्जित करिषु।

विधायनिक अख्य मोक्ष माधुरीक गुण-पाण्डु मे एक सप्तमे मे अथान विधिनानि
विमर्शितं भवति चेत्तु अथान-विमर्शने मे एति कर्तव्यक प्राप्ति पाताया भवति चेत्तु ।
पश्चात्तु हाथ मोक्ष प्रागन्निमन्त्रणकारी सुधर्मा लोके कर्मा लुप्त हुम्मेने लगत विधिमर्क
आपन्नमे एते मन्त्रमन्त्रा कारणात् हेतु निमित्तानि अथान चतुर्दिक आचार-धर्मद्वारा के
पापाप-पर्याय हाथ करे केलेक । सुधर्मा कर्मेकारणात् एते पापाप-धर्म । भूत-धर्म मोक्षा,
आर्तनोक भूमी । अथान-विमर्शनी रम विमर्शने अथान मे मूर्धन्ये सागुल एते विमर्श
अथान-एति मर्गिण्ये कर्तव्यक लोभान् भविषी कर्मा अथान विमर्शने मेलेके

तमाम्बु मुग्ध विपरीतित भए गेल छल । कुइए देखी-सुवाय सोहि प्रकरे" कहियो ई छल
जहो सस्यसक व्यापारिकता कहि पाबि सकलाह जेना विद्यापति मैथिली माथी
वैद्याजीक शैलीमे लेखल । माथ मे, खंभोद जकाँ रसि-वासि भेल कहि ।

एहि विवेचक छोट परिधि मे विद्यापतिक अनुकूलि प्रतिभा के बहुलापेय
उपलब्धि सुखक प्रति स्थाप करब समय नहि छल । असु अष्टौरी कायक, गायक
अथ मे, सुमरा विद्यापति कायक जे पथ सब व" अधिक महत्त्वपूर्ण परिलक्षित भेल
अथि छतराँ जकाँ करि हम गहि विवेच के" अध्यापन उल्लेख छी ।

विद्यापति पत्रिका मे विद्यापति के जेना देवता के रूप मे वर्णन के एहि
कारण गलत आथ । जे एहेन गलतप्रायकारी विवेचक उद्घाटन होला नकार करि-
कर्म गहि माथ के" पथ सहेलस सब पर स्थान छी कहि भईल, अथि ई भए
कारण गलत माथक भएल जनिअई अथि भेल । ई जहिउ एव मे विद्यापति
के" अभिनव अथरेक उल्लेख भेल छल ।

अष्टौरी कायकार मे विद्यापति सदावत्तर गायनार्थि कह छल
देखि-सुवाय सुनेनर गोती देली छल मे गहु भुज कालक उल्लेख केनहि सुन.
विद्यापति अथन वलिता मे पाबिअलस मा प्राप्ति कायक पञ्चमिक आधन नैन हनि,
अथन ई विद्यापति कायक अथन अथन अथि अथन विद्यापति कायक अथन अथन
मे सामुहिकता के" पथ अथि अथन अथन, अथन अथन अथन अथन अथन
विद्यापति मे अथन अथन अथन अथन अथन अथन अथन अथन अथन अथन
अथन अथन अथन अथन अथन अथन अथन अथन अथन अथन अथन
अथन अथन अथन अथन अथन अथन अथन अथन अथन अथन अथन

अथन अथन —

- (१) अथन अथन अथि अथन अथन अथन ।
- (२) अथन अथन अथन अथन अथन अथन ।
- (३) अथन अथन अथन अथन अथन अथन ।
- (४) अथन अथन अथन अथन अथन अथन ।
- (५) अथन अथन अथन अथन अथन अथन ।

अथन अथन अथन अथन अथन अथन अथन अथन अथन अथन अथन
अथन अथन अथन अथन अथन अथन अथन अथन अथन अथन अथन
अथन अथन अथन अथन अथन अथन अथन अथन अथन अथन अथन
अथन अथन अथन अथन अथन अथन अथन अथन अथन अथन अथन
अथन अथन अथन अथन अथन अथन अथन अथन अथन अथन अथन

नौभक्त कवि एवं व्यक्तित्व का यह प्रतिनाक विशिष्टता है जीतधीन नहीं, अपन अनुभव वास्तव्य साक्षात्कार का कारणे विद्यापतिक विश्व विद्यान की प्रतिपादनी अर्थात् बहुमंथनित वैदिकविभव (Vedic-epic) का यह नृत्यक संगनृत्य समकल कवि एवं कलेक विभव से विशिष्ट है ही नहीं। समकालीन समाज जीवनक सम्पूर्ण आवाज में, पुराण से, शास्त्रों से युद्ध, व्यापार, निवास, कागूम आवास, प्रकृति एवं ये विद्यापति अपने विश्व यात्रना करने लगे। अपने काव्य चरित्रक गुणिक सेन उपपुस्त का उपासी कीने विश्व से कवि सामान्य धर्म का साधन आसापारिभ, कीने विश्व में मदि सुमेय धनार्थः। अतएव विद्यापतिक कीने विश्व बोधन संयत्त काल्पनिक नहीं, अ कीने-कीने विश्व यात्रना असेवी कवि कीने अथवा साधनक दुष्टक काल्पना की अहंगमका तुलना में आवाशपूर्णक समष्ट्य का ही है।

आध्यात्मिक (महाकाव्यिक) कवि मनक कीने विद्यापति का गीत नाटकीय कृत्य में परिपूर्ण नहीं, विद्यापति पदावलीक उच्च अर्थकाव्य का सामान्य परिभाषा है ही है, व्यापकता का नम्यता से युक्त विशिष्ट कविता विशिष्टता की उदाहरण के उदाहरण के विद्यापतिक कविता विशिष्ट गीतक प्रथम पद उदाहरण का सकेत है—

- १) कलम लेखन मदि हीन मरना ।
- २) मदनम लोभे कि कहुन भगव ।
- ३) कोइ जराधि मदि जानु सुमे मर ।
- ४) उर-उर माथे कि बुनगि मर ।
- ५) गुन-गुन गुन-गुन मर मरना ।
- ६) मरना गुन मदि जानु परदेव ।

का पृष्ठ पर समक तुलना सर्वप्रथम आध्यात्मिक अर्थ की कवि कीने निम्नांकित पदिक सम से कीने का उदाहरण है—

१. इस विशिष्ट की वागधुनेक, की केसर्ह दान का मदी
आवन केसर्ह देव मदी
(I wonder by my beauty, what thou art
Did tell me once.)
२. ईश्वरक लपट कीने जहाँ मुँह मर राखू
आ करए विश्व मदी मदी

For God's sake, hold our tongue and let God talk.

३. मनुजस्य हंस आतुषिं जगत् कद् देव
नहि अस्मि हंसस्य धाम्नि

['Weakest one, I do not do

Even what is best for myself']

जो धिरहो घेपी वृत्तस्य तुमेता कुरुबदमाह विगरीत घुडी कौटा से भवे
कलाह का बेस कमिला के गति ऐसो मदिनाय विन्द आह्वा के फवि लाभोचकनम
असम्पत्तिरेक से विस्तृत घा गेव सुभाह विद्यान्ति हमरा वध के ई प्रतिभा
वैत धुनि—

कमे-कमे नयन कोम लघुपरद ।

श्री ई प्रतिभा विद्यान्तिनीय नहि की ह ३ श्री ई जेन कादिनाह वैद्यनामिनीय
प्रतिभा अधिक स्वाभाविकता से या गवकह हिन्दे होकर कर्तव्य से लम्बन
हु वय कर्त वदिने जन्मन नहि धेव अस्मि ३ योग्य सुगतिह चरुधनकी दानिह,
"Earlier than he is, let us say, that he is, that he is, that he is, that he is—

हमरा स्वोक्त नम अन्ती नम हंसस्य, अस्मि
हंसस्य तर्हि नहि हंसस्य आनिमयवद
तर्हि नम कर्तव्ये पुन नहि ज्ञेयव
कर्तव्य हंस वदिन गन्त नहि होयव
श्री हंसस्य अर्हि अर्हि हंसस्य
अर्हि हंसस्य

जो लाभोचकनम अर्हि-काय से अर्हि भगवन्तव गन्तव्यक विद्व विधान से कर्तव्य
चातुसक चरुधनकी दान नम धुनि, पुन नहि नम गवक नयन से विद्यान्तिक
नयन से जो हंस के सम्पत्ति पुन नम वदमाह—

- (क) विद्यान्ति नम भगवन्तव अर्हि
जिन् नम विद्यान्ति हंस ।
काय नम अर्हि नम नम नम
अर्हि नम अर्हि नम ।

- (ख) नम नम नम नम ।
नम नम नम नम ।
नम नम नम नम ।
नम नम नम नम ।

विश्वान्वेषण करीत छल्लहूँ तबनाहि जनसाधारण प्रकृतिक बीरा में लपक गेहूँ "यह
बाबा"क सहाय एवं सहाय के माध्यम से एक भाव जोति करी "जनसाधारण" इति शेष ।
अनुसंधान अपना आचरणप्रमाणित सब किन्तु निर्माण करीत अहि शायद ही ज्ञान प्रदित
लपक बीरा को सही पदिक सकल लक्ष्य को जगता हूँ जगत् को समीक्षात्मक निर्माण गेहूँ
हेमक के मानवगत में प्रकृतित प्रथम भाग "वैजिनी" ओकर प्रतिक्रिया तिनू-मुनम-
मानक तथा राजकीय प्रतिक्रिया में जे अर्थ रखत हों साहित्यिक शोध में ही ई दण्ड
इयन काहलू में १२, १३ में शान्तरी और अहि प्रतिक्रिया शोध में प्रकृत माय में
बाबा की "मानव" माध्यम जगत् का प्रमाण जगत् में १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४०, ४१, ४२, ४३, ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ४९, ५०, ५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८, ५९, ६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६९, ७०, ७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ८१, ८२, ८३, ८४, ८५, ८६, ८७, ८८, ८९, ९०, ९१, ९२, ९३, ९४, ९५, ९६, ९७, ९८, ९९, १००, १०१, १०२, १०३, १०४, १०५, १०६, १०७, १०८, १०९, ११०, १११, ११२, ११३, ११४, ११५, ११६, ११७, ११८, ११९, १२०, १२१, १२२, १२३, १२४, १२५, १२६, १२७, १२८, १२९, १३०, १३१, १३२, १३३, १३४, १३५, १३६, १३७, १३८, १३९, १४०, १४१, १४२, १४३, १४४, १४५, १४६, १४७, १४८, १४९, १५०, १५१, १५२, १५३, १५४, १५५, १५६, १५७, १५८, १५९, १६०, १६१, १६२, १६३, १६४, १६५, १६६, १६७, १६८, १६९, १७०, १७१, १७२, १७३, १७४, १७५, १७६, १७७, १७८, १७९, १८०, १८१, १८२, १८३, १८४, १८५, १८६, १८७, १८८, १८९, १९०, १९१, १९२, १९३, १९४, १९५, १९६, १९७, १९८, १९९, २००, २०१, २०२, २०३, २०४, २०५, २०६, २०७, २०८, २०९, २१०, २११, २१२, २१३, २१४, २१५, २१६, २१७, २१८, २१९, २२०, २२१, २२२, २२३, २२४, २२५, २२६, २२७, २२८, २२९, २३०, २३१, २३२, २३३, २३४, २३५, २३६, २३७, २३८, २३९, २४०, २४१, २४२, २४३, २४४, २४५, २४६, २४७, २४८, २४९, २५०, २५१, २५२, २५३, २५४, २५५, २५६, २५७, २५८, २५९, २६०, २६१, २६२, २६३, २६४, २६५, २६६, २६७, २६८, २६९, २७०, २७१, २७२, २७३, २७४, २७५, २७६, २७७, २७८, २७९, २८०, २८१, २८२, २८३, २८४, २८५, २८६, २८७, २८८, २८९, २९०, २९१, २९२, २९३, २९४, २९५, २९६, २९७, २९८, २९९, ३००, ३०१, ३०२, ३०३, ३०४, ३०५, ३०६, ३०७, ३०८, ३०९, ३१०, ३११, ३१२, ३१३, ३१४, ३१५, ३१६, ३१७, ३१८, ३१९, ३२०, ३२१, ३२२, ३२३, ३२४, ३२५, ३२६, ३२७, ३२८, ३२९, ३३०, ३३१, ३३२, ३३३, ३३४, ३३५, ३३६, ३३७, ३३८, ३३९, ३४०, ३४१, ३४२, ३४३, ३४४, ३४५, ३४६, ३४७, ३४८, ३४९, ३५०, ३५१, ३५२, ३५३, ३५४, ३५५, ३५६, ३५७, ३५८, ३५९, ३६०, ३६१, ३६२, ३६३, ३६४, ३६५, ३६६, ३६७, ३६८, ३६९, ३७०, ३७१, ३७२, ३७३, ३७४, ३७५, ३७६, ३७७, ३७८, ३७९, ३८०, ३८१, ३८२, ३८३, ३८४, ३८५, ३८६, ३८७, ३८८, ३८९, ३९०, ३९१, ३९२, ३९३, ३९४, ३९५, ३९६, ३९७, ३९८, ३९९, ४००, ४०१, ४०२, ४०३, ४०४, ४०५, ४०६, ४०७, ४०८, ४०९, ४१०, ४११, ४१२, ४१३, ४१४, ४१५, ४१६, ४१७, ४१८, ४१९, ४२०, ४२१, ४२२, ४२३, ४२४, ४२५, ४२६, ४२७, ४२८, ४२९, ४३०, ४३१, ४३२, ४३३, ४३४, ४३५, ४३६, ४३७, ४३८, ४३९, ४४०, ४४१, ४४२, ४४३, ४४४, ४४५, ४४६, ४४७, ४४८, ४४९, ४५०, ४५१, ४५२, ४५३, ४५४, ४५५, ४५६, ४५७, ४५८, ४५९, ४६०, ४६१, ४६२, ४६३, ४६४, ४६५, ४६६, ४६७, ४६८, ४६९, ४७०, ४७१, ४७२, ४७३, ४७४, ४७५, ४७६, ४७७, ४७८, ४७९, ४८०, ४८१, ४८२, ४८३, ४८४, ४८५, ४८६, ४८७, ४८८, ४८९, ४९०, ४९१, ४९२, ४९३, ४९४, ४९५, ४९६, ४९७, ४९८, ४९९, ५००, ५०१, ५०२,

[illegible]

अहि सम्बन्ध में महात्म-योगवासना सचि वरद्व असंगत नहि समन। अतएव ।
न हि हिंसा यः पश्यतः कदापि, कोपराग आदौ किञ्चन प्राप्ते विना ते नहि कश्चि मुखा
एतद्वदति स्पष्ट अस्ति ते अहिंसे बहुत सम अहि नैतिक एतन् अस्ति अतएव
अहिंसात्मक विवेक नहि पूर्वं आत्मिक एव न । महात्म-योगवासने ये पश्यन्त १२०० अ
अधिक भोजन दातु अस्ति ते तस्मात् पति वेदितव्यं ये अस्मिन् अहि—सुख अहिंसे

[illegible][illegible]

रेवि मयलनुं योरी देहुर होर.
 कवकं पवित्रम कभकल होर
 कनु जगदी हीर नंदुर यो
 नौनदु नौ नान ननानन होर
 मनहि विजयपति मुनिपे नजेन
 नौमकांड नाइ इरपु कसेक ॥

मानविकताक हांग अपन के सादान्कार हए महकबि विद्यागति युग एन जस्टाक
 कबि भए बेमज्ज ओ हास्य कारक कोक ने हस्तक नाव बनारक गीत मधुना नाक कभ
 ने सुगमिठ खिछि आर कोके कक सदेश-दिदेश मे प्रकजित-प्रसारित भेल । नहान
 कबि ज्योएइ होइत खिछि के अंगन बनता-अनामद हुन्छ जाकीछा के लएकार भनेत
 कबि आर बनारक गीत किआ अंगन भुसैत छेक । कबि भुसैत लो बैसत नाव,
 महकबि मल्लन भुसैत छेक । अ भरि ई संसार रहत, ओ अमर रहताह । विशिष्ट
 अध्ययन से हुनका अरु बहुत लक्ष गीत बनरा नोकनिक गमल आबैत ।



(2) I have not move my chin eyes any way,
Despair behind, and death before does cast
O such terror, and my feeble flesh doth quake
By sin in it, which it towards hell doth weigh.

(1) Will you forgive me as I have seen
Others do sin and make my sin their door?
Will thou forgive that sin which I did when
A year or two ago I loved my score?

c) 'Oh my, a.k.soul now, you art sum named
 By sickness: death's herald. No cha-nge
 You art now a person who: good has no
 Ties, and dost not care where you is. Oh,

[illegible]

(a) O do not use me
As of my sins: look not on my desert,
But on my glory, when thou wilt reform
And not refuse me.

- (b) Awake, and heart whose sorrow ever drowns;
Take up thine eyes, which feed on earth
Unfold thy eyelids, gathered into frowns:
Thy saviour comes, and with Him mirth.
- (c) Sorry art, my God and Father
Thou thy offending course art on a ring
(d) Wherefore thy robes and shoes
Laid I acknowledge and thy plaques away

विद्यापतिक गद्यबोधक व्यंग्यपर ही है बुझना चाहिये कि श्रीराम उपरान्त के विद्यापति के हैं। बांगर मति विदुषा उगलत या मेरीति तथा जो कर्म सम्पत्तिक निमित्त देवी-देवताक शर्पेनर कामेति। छोटी मति प्रमान पर से बख बाट पर दाय बाहि बाहि से बधिक अनुगतक बाधमति सेन बाहि। बाधुत निर्वय से को ही बोधो नयक मतिन विवेकन करन बाधुत।

संगत के विद्यापति-रचित राधा कृष्णक प्रथम गीत के श्रेष्ठत ओकनि अपनानोत एतेक बारी के आति पीठ के राधा-मधनक जलनेन बाहि नय ओकरहु नायके नाबिछाये राधा कृष्ण मति बाँकना भक्ति तथात माधव से कोनो बाधना होइक निबन्धा के कालकमे विद्यमानक बाधना-रस-मयान पर प्रथमक उदैला बधारी बाहि भक्ति-वधन करन प्रथम बाधक सेन। कथन मति-प्रधान पर बाधक सम्पत्ति पर बाधनागत रूपक बाधने तब प्रथमक भाषा परिचयन से ही प्रभावित होइके करन बाहि सन से बाजालर गहो वलन बाधिका राधा से बाहि सेनका मतिन बाध के उदैक बाधु सेनो बुझ परदेन। के ओकर बलनेनक बाध केनना में ओकर शायनिहता से संगत बाधकधनक गति विद्यापतिक, परक प्राधानिक मंचहु (न्याय) में गति पर तब के राधाक भाग बा बाहि से नित्य तबन तबन पर तब विषय से कनेक दुर्गे नगदिकर करन प्रथम करन बाहि। अस्तुत निबन्ध के अन्तर्गत विद्यापति-रचित किन्तु सुनायिक निबन्ध मगर का बाधक विवेकन होइस मतिन ओकर नूतन विवेकनाक भाषा से गति मल के बाधक भावना होइक मति

एक के नाम छोटी अनुलापमूलक है कयो पर नूतन प्रविष्ट बाहि। मतिमे नूतन विवेक-बोधी से हीक एक बलौपुत्रीक पंचद से बाहि (न्याय) नामाभाक पाण्डुलिपि) के बीच बाधक बाधनाक कृत 'कह करन पर' का मध्य स्तोत्र के केलेति। एक गीत परक पाठाला बाधिका श्री रामानंद का प्रथम भाग बाध कर विषय के बाधक-मूलक बाधिका से प्रभावित सेन। एहि कयो पर से बाध बाध बाध-मतिन

१४) मोक्ष प्राप्तुं विष्णु काये

समुपासीत — ७७५

सा — २६

१५) विष्णु भक्त्यै, तस्मिन् समुपासीत कदा चेत्

समुपासीत — ७७६

पश्चिम १४ से १५ वाँ पाठ्यपाठ्य पाठ सुतन्त्रात् निर्मित समुपासीत शार्ङ्गना
कौश्ल एवम् अथर्ववेदिक तान्त्रिक कर्मकाण्डे अस्ति —

"नहि केन पुनः शैवा नहि केन व्यापः

चित्तस्य तस्मै कदा कदाचित् कदा ।"

परमेश्वर वाचक व्याख्या नहि कर्तव्य इति एतद् दृष्टिकोण उपासीत शार्ङ्गना
अथर्ववेदिक कर्मकाण्डे अथर्ववेदिक तान्त्रिक कर्मकाण्डे अथर्ववेदिक तान्त्रिक कर्मकाण्डे
अथर्ववेदिक तान्त्रिक कर्मकाण्डे अथर्ववेदिक तान्त्रिक कर्मकाण्डे

अथर्ववेदिक तान्त्रिक कर्मकाण्डे

एतद् कर्म विष्णुना शैव भक्त्या

एतद् कर्म विष्णुना शैव भक्त्या

एतद् कर्म विष्णुना शैव भक्त्या

एतद् कर्म विष्णुना शैव भक्त्या

सुतन्त्रात् निर्मित समुपासीत शार्ङ्गना अथर्ववेदिक तान्त्रिक कर्मकाण्डे अथर्ववेदिक तान्त्रिक कर्मकाण्डे

अथर्ववेदिक तान्त्रिक कर्मकाण्डे अथर्ववेदिक तान्त्रिक कर्मकाण्डे अथर्ववेदिक तान्त्रिक कर्मकाण्डे
अथर्ववेदिक तान्त्रिक कर्मकाण्डे अथर्ववेदिक तान्त्रिक कर्मकाण्डे अथर्ववेदिक तान्त्रिक कर्मकाण्डे
अथर्ववेदिक तान्त्रिक कर्मकाण्डे अथर्ववेदिक तान्त्रिक कर्मकाण्डे अथर्ववेदिक तान्त्रिक कर्मकाण्डे
अथर्ववेदिक तान्त्रिक कर्मकाण्डे अथर्ववेदिक तान्त्रिक कर्मकाण्डे अथर्ववेदिक तान्त्रिक कर्मकाण्डे

"एतद् कर्म विष्णुना शैव भक्त्या

अथर्ववेदिक तान्त्रिक कर्मकाण्डे अथर्ववेदिक तान्त्रिक कर्मकाण्डे अथर्ववेदिक तान्त्रिक कर्मकाण्डे
अथर्ववेदिक तान्त्रिक कर्मकाण्डे अथर्ववेदिक तान्त्रिक कर्मकाण्डे अथर्ववेदिक तान्त्रिक कर्मकाण्डे

अथर्ववेदिक तान्त्रिक कर्मकाण्डे

अथर्ववेदिक तान्त्रिक कर्मकाण्डे

पर कम भीम मानस ताभीन
विष्णु कलम दुर गेल ।

कपट वर कलेवर गीतस मजम-गोरे

'परचरि' ? अधिनक आदरक अंजन का परिणतभावक रूप के कौनों
मुलासी भावोंगे कुरंगी के लोभा पदम रङ्गिनी की । तबि कपट कौनों भास अनाम तबि
तबि परचरि सुव प्रकारक साधिकाक बलन कागुनहार कवि केवल काल्पनाक साधन
लेलेनिह का संज्ञात काव्यरूपी आशयक भावतत्पर कागुनित्त से साधन तबि काल्पना
से प्रत्यक्ष अनुभवक तरेक प्रभाव अति छे अथवा उग्या प्रभावसे न अन्य तरह कए
सकैत छनि । से विद्यापतिक चितक आकुनछ के औपचारिक तबि सवापे मानद
पदम ।

तोरे प्रभु विधुवन नां से कर दल गीत महुन कवि विदुः । तबि के कवि
कपट वरक हेतु अद्वैत से पारंगत करैत छनि । ई लका ऐहिक सति विक से एहि
सति से कपट छनि—

"कपट वरक सवहुनि हे कर पदमहे वाद प्रयोगे"

अब छोट लका अनर्कक छनि तबि तबि तबि तबि तबि तबि तबि तबि तबि तबि तबि
कवि कपट विन प्रयोगक उपाय न भविष्य तबि विषय के कपट प्रयोग से छति के
अब अद्वैत काव्यरूपी अनामक उपायनर काल्पनाक आति । विद्यापतिक अति से विद्यापिक
उत्तर संज्ञाक साध से के काव्यरूपी आदरक अति हेतु के सति से विद्यापिक प्रयोग कपट
छनि । तबि तबि के प्रयोग कवि कपट अनामक वरक करैत छनि—

'अनाम संज्ञा गेने तबि अनाम सेने

अति सोने तरेक वरकने ।

कौ काव सति केने सोय तबि सति सेने

अकहेने केनाकने सेने ॥"

स्पष्ट अति से कवि अनाम अति परचरनयन आदिक गुणि तथा नानि गुणक
विभिन्न रूप, वर, अति, अनाम अनाम अनाम अनाम अनाम अनाम अनाम अनाम अनाम
केवल प्रभावक अति के अनाम अनाम अनाम अनाम अनाम अनाम अनाम अनाम अनाम

"हेतु अति के अति अनाम अनाम

अति अति अति अति अति ।

अनाम अनाम अनाम अनाम अनाम

हेतु अति अनाम अनाम अनाम ॥

अनाम अनाम, अनाम अनाम अनाम अनाम अनाम अनाम अनाम अनाम अनाम अनाम

विद्यापतिक किञ्च कवितामे दुखक विविध रूप

ਸਾਂਕਲਰ ਮੀ ਬਾਗੀਚਰ ਡਾਕੁਰ

[illegible]

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए -
 1. निम्नलिखित कविों में से एक का नाम चुनिए और उनके जीवन के बारे में संक्षेप में लिखिए।
 2. निम्नलिखित कविों में से एक का नाम चुनिए और उनके जीवन के बारे में संक्षेप में लिखिए।
 3. निम्नलिखित कविों में से एक का नाम चुनिए और उनके जीवन के बारे में संक्षेप में लिखिए।

लौक-लोकानि भूषि तैर, कसम अ इ तैर, अकण्ड रौद्र वि काष्ठक कोनो ताभ नहि रहल ।
 ओर से बरजि पाइका पानुन देसाग नायक बाबु येव नहि काखइ लोक विद्या-
 पुरिषा कोनो छे वे उत्कंठा बर तीव्रता कायक बौध इत्यंत छे आ पब से सभ सोचना स-
 न्निभ्यन्त सोदम लोक-गे सस्य-स्य बौधनक दुष्ट लो कानागक मनी मगे एकलप कए
 दैत लोक । 'नबहु बहाधर करमिन धन' मे जेहन पुनस्ति छैक लोकटा भक्तीक छे
 पुन लोकाभास सेहो कति नकोन छी । धारुणर आब चारुणर नहि छनि

[illegible]

४४२ कविता से व्युत्पन्न अंश श्रेष्ठतः सूचना भाषा से विहित जाति

સે અલિંગનગદ સમી રક્ષા ભાગદ

ਦੁਆਰਾ ਸੋਧੀ ਕੇਸ ਖਾਸ 14

[illegible]

ये रीति उपादेयक विद्यापति काव्यकीर्तन या भावपूर्णता द्वारा भू वार मौनिक यथन व्यक्तिकृत काव्यधर्मक अनुगार विकास करित छनि बहुत कम या ग्राहक यगल नागर हस्त से का अनेक रस-रूप-व्यापार संभोज कवि से बहुत ग्राह्यता छनि । तँ अहिना अर्थक कम या कम के पाकरी सम्पन्न अभिरंजित आदेश ल' करिक यथार्थ अर्था सुजित छनि तहिना विद्यापति रन या कम के केवल कवीन्द्रमय शैली से धरु ओ सोमिल पद्वि आसीत छनि ।

५०म कविता से अंशक परिचलनक उपमा, विद्यापति आदिक पानि सँ चैत छनि जेकर समर या फूलक उपमा भू वारक कवित्तक गमटा स्वरगी बग छैना छनिना आदिक पानि एकटा मय तरहुक उपमा या विद्यापति कोर केटिना कवि छनि एकर व्यापक लक्ष्य छै कए सकत छै के हुन उपमा कथापुनर एके कवित्तमे लक्षि या हुन पर एहम वस्तु अविकार छनि कवि सँ, अतएव गीति अर जीवनक गति के समानाधिक छै एक अर्थ से ओ सुन्दर छनि आ कविता से ओकर निराल करैत छनि । कोनन बहुमुखी भा परिचलनधीन जेना न अतएव अर्थक के मानन जीवनक अर्थ-बोध सन पुनर्मुखी रीति विद्यापति नागरिक भाषा मे करैत छनि—

किर मर अहिम सफल मैलाय ।

यमु मर के मर मनुष्य छै

काय गीरम ई मर रच ।

अमर या फूलक उपमासे समर या फूलक अभापुनर सँ उत्पन्न ई अवैरक भाषण परल सुनि पहुँच—कविम यथनक सकारो एते सरल मरि सुनि पठित छैक यदि कोनो कवि के विद्यापति अता कि मुनकाट बहुत रूपमे कोनन होइतनि किन्तु हुनका अष्टौ जीवनक सत्य से निराल मरि होइतनि तँ ओ अवयवे एकरे पद सकाराट मुनितनि छि पुन अर्था भा गेय विद्यापतिक या ग्राहक कवित्तमे विस्तृत जीवनक से समन भार कोर तरहि न मुनकर काव्यकीर्तन सदा मुनितनि या कविकवेरन रहैत छैक ।



[illegible]

[illegible][illegible]

कामे विधिवत्क राजा तिष्ठति। ओ आनो राजा लोकनिक संघे बृहत् सेवा के साधन स्वरूप होयताह। ओ गेलो स्वरूप होयताह से विद्यमान कमान ओ सरस। येन होयताह से निर्दिष्ट कये। कि क रीति करेताह कि ओ कर्तव्यता ओ कोविदता के धुनक के जीवन ओ यवार्थ कयेन अरि के सख कमान सन्नि से तत्पर रहि। विद्यमान के प्रवृत्ति कलगी शक्ति दलक उचैरा ओ यवकारक कलै महु के हुनका संग शक्ति सम्भव रहि—ये विनु देखेन महु आनो ओ कवि कुर्वन कोयनगोक महु शक्ति कयेन कर सकैत अरि, तकरा से कमानये को। राजकारणक के परिचय ओ सम्मान हुनका निर्दिष्टिह विधिह आ हुनक रत्न राशिकारी वागकाम से भेदनेह प्रवृत्ति कलै ई स्वतः विद्यमान सए वादत ससि ओ ई विधिवत्क कोविदता राजकारणक साधन, सम्मुख ओ कवि कलकारन सेन जयन बृहत् आ वागकाम से विनु उचै रहि रहने होयताह। यवकारक राजकोविद सम्पाकार ओ महु यवगीभरक के विद्यमानिह सद्यः सामान्य राजकारण सम्बन्धितक प्रवृत्ति राजकारण से अनुभूति सए होयनीह सम्बन्धी योही मुख्यगीत निम्न अकरा ओ स्वर 'राजकोविद' विषय कहने कवि। एकर अरिहस कोविदता, कोविदताक संग देवताक कामगामक सम्मान से कोविद कय कलै के कमान श्रम से विद्यमानिह रत्नगीन यवार्थ से राजनीतिक धुनिह। यवेन। यवक कयन। ताहु से वेनी 'विद्यमानि' के वाग विचार्यति। कय हुन कवि सको सम्बन्धितकरी यवा वागीगीरक, वागीगीरक, मुचहुन कलै सम्बन्धीन यवगीन यवगीन, यवगीनक प्रवृत्ति ससि ओ मित्र कय देवता के ओ ओ सविद राजनीतिक धुनिह। यव हुन कय से वाग कलै राजनीतिक कयय कलै कलै सविद।

[illegible]

यही वृद्धे गद्येन कथं भवत्यु” राजाक कान्तसाक रक्ष्य राज्य गते पादपान्ता
 ह्यु एवद्वानि ये इरह गमनं गेम अदि ते राजा पुनश्चतु वासन जयता गलन
 करैत धनसाय पुनकि जगन वरणीक यच गति वाएव नयय काभं भाव गति वलोक
 मे इत्येव —

“विद्यापति धनिययो यस्य सत्य राज्ञोक्तं हिष्य”

विद्यापति तु तत्कालमायुः शौचं नयति भूयते”

राजाक विद्यापतिन तु पुन दया गते कोनक वरुण्य कनेक अदि ते जेनय कीटिलक
 एक कान्ताय से काष्ट मर्ह होइत अदि गनवा विद्यापतिन दन दयोक्त से— राजा न
 विना सेवयते अ कृतं क्षमयति तेना य मनापीना । तामुक अन्तर्गोष्ठोव राज-
 नेति ये राज्यक चोवद्विक निगेष तेको छनिक जसेल नद्वेव अदि नयते गणपुन
 कान्तायीत वरिचर राज-गति मे तेना छन ते विद्यापति ‘गुणद्विषाया मे नहने छ’
 ये ‘अष्टे कावे तुन मये वादेष विक्रिनाते, कुतोयेन वनयैते प्रस कल्पसंभारने
 एवंधकायेव योवगतेका दशमन् गे ‘गुणन पद्विषा व गतनेपिक विचारय वविगल्लता
 विद्यापति तेने अदि सकल विषय वरुकरा एलप संदध नद्वे आछे तुम जयत शेष
 यय मे वने प्र। ।

[illegible]

[illegible][illegible]

देसैंत छवि । भूत, बलवान एवं अविध्यक यमो जाइ को जानि मेकाइ अछि ।
 “अछि मेकाइत हूर न गुनए यम कुटि मेत काओ” । अछिमे कसि मे यमगुनह
 अन्दक अचिक द्वारा को लखयो हें अचकइ अपन बाणी दिखि सकौत करैत छवि—
 “बुधको कर्षावर कोरे निरोबिअ सर लखर चकासी ।” बलवानक दृष्टिकोण जाइ
 करिक जीवन-दर्शनक अभिन्न अंग बन गेल अछि ओ ओहि दृष्टिकोण सँ बाह्य
 जगतका केँ नहि, अन्तरात्मा केँ देखैत छवि । एहि कविता मे इहो विशदरणीय अछि
 यै अकर अन्त कोतो अभिन्न सँ अछि कएन गेल अछि । एक सँ बाय कवि लक्ष्मीक
 कारण एहि सँ बाह्य नहि बाकि अर्द्धत छवि, दोसर जाइ हुनका अन्तरात्मा कृतिक
 संप्रसारण करबाक क्यामाँह नहि रहल । जाइ हुनक जीवनक संप्रसारण भिन्न
 गेल अछि । ई कविता बुद्धावस्था पर लिखल हउसूँ भी० श्रीदत्तक कविता सबहुक
 स्वरूप करैत अछि । किन्तु श्रीदत्त केँ जन्मकाल धरि अंतर्गत जीवनक
 मोक्षकला छलैत रहल तथा भी केदक मानना सँ अपन केँ मुक्त नहि कए सकलाह ।
 विद्यापति अखिलजगत्क अलि अलोकारात्मक दृष्टिकोण व्यक्तकैत छवि । बलवान
 हुनक सृजनात्मक व्यक्तित्वक साक्षि हो अन्त निहित अछि तथा अन्त मे अछि । “In
 my unconscious is my end”.



[illegible]

मुखा कोषो कविक हृदिक आभीरव विनयेन नमस्कृत्य नहि गच्छेत् । कवि काव्यं धा-
कवि अथाप्य इत्यादि वा कदाचिदाहं प्रवच्य भवेत् तदाहि ज्ञानात् परं हि अनुमानं काव्यं
आ लोकेन ते विदितमात्रं ये कोन कविक को एकं तुल्यं इति वाग्विदिक
महाय वे—

वाग्विदिक कविबहुवच कविता जनचारित्र्य सुखस्य समकथा नाद को न
काहि वदन्तस्य वाग्विदिक विदितं प्रभातं नृलोकात् नमस्कृत्यो हस्तं येन रम्यं
रम्यं रागधनी नया इत्यादि । कानिदासक कृति ये ते सत्सज्ज वसोभ मेदत—

अथवा कविभिरासादाः अथवा नमस्कृत्यो
कसे नमस्कृत्यो न नमस्कृत्यो नमस्कृत्यो
मुनेषु वाग्विदिकरीषु कवेषु नमस्कृत्यो नमस्कृत्यो नमस्कृत्यो
नमस्कृत्यो नमस्कृत्यो नमस्कृत्यो नमस्कृत्यो नमस्कृत्यो
नमस्कृत्यो नमस्कृत्यो नमस्कृत्यो नमस्कृत्यो नमस्कृत्यो
नमस्कृत्यो नमस्कृत्यो नमस्कृत्यो नमस्कृत्यो नमस्कृत्यो

वाग्विदिक विषय वे—

अथवा अथवा विदित विदित विदित विदित
नमस्कृत्यो नमस्कृत्यो नमस्कृत्यो नमस्कृत्यो

वाग्विदिक विषय वे—

अथवा विदित विदित विदित विदित
नमस्कृत्यो नमस्कृत्यो नमस्कृत्यो नमस्कृत्यो

अथवा कविभिरासादाः अथवा नमस्कृत्यो
कसे नमस्कृत्यो नमस्कृत्यो नमस्कृत्यो

अथवा अथवा कविभिरासादाः अथवा नमस्कृत्यो
कसे नमस्कृत्यो नमस्कृत्यो नमस्कृत्यो

अथवा अथवा कविभिरासादाः अथवा नमस्कृत्यो
कसे नमस्कृत्यो नमस्कृत्यो नमस्कृत्यो

अथवा अथवा कविभिरासादाः अथवा नमस्कृत्यो
कसे नमस्कृत्यो नमस्कृत्यो नमस्कृत्यो

[illegible]

सायनायति विजयवामनः पञ्चविंशतिषु कालक्षेत्रे
 सायनायति विजयति शोभते मयूर मयूर पक्षिः
 कर्तुं कश्चि मृत्तङ्गप्रभं भवति व्यवसायिकान्
 विविधप्रकारं सायनं सायनी शोभति विजयति

ही अथर्ववेद को मन्त्रों से कम धान्यसे पणि ३ केसों संस्कृत कवि का उपाधोक्त
 (आयः धर्मदेव) नमस्तेज के निम्नलिखित शब्दादि मुद्रित करने सुचोस्त—

सौम्या धृष्टकाश्यायाः कश्चिन्ना इत्यत्र श्रिया ।
 यत्तु भावाः सभृगारः । अथर्वेक एव साते
 सप्तमी भाष्येति । विन्ता न यदस्ति यथाः
 सप्तमी शकंसाति
 इत्येवमस्ति के
 सप्तम्यात् सप्तम्यात् सप्तम्यात् सप्तम्यात् ।
 साकम् अथ साकम् अथ साकम् ।
 सप्तम्यात् सप्तम्यात् सप्तम्यात् ।
 साकम् अथ साकम् अथ साकम् ।
 सप्तम्यात् सप्तम्यात् सप्तम्यात् ।

साधुपुत्रक जति स' वेच की श्रमकी मज लईछ । मुदा बगलबगल जहि
 बसुलल्लख चीरिबौ । ते, बाकी के बेगी बघुन जा गिरीरो स' अधिक बाइक साधुपु
 त्र' गाम्नुतिन। आबाई बीबनि अलख कोटि भाष्यक साधुपु बहि मानव । यह
 भाष्यमय मि कहीक पदवान कइपाहो कहल । हमरा गेबै बहि ये राख-बाइ के
 निबद्ध सुलाक कारो। अपवित्रक भवावर्ती के भ-चर्य लोकनि बाइ कोत भाष्यनि ।
 कवई बाबहो अपन रचनाक भाष्यकय 'बीछ बोबिस्य' कइने छथि ।

अवदेवक वादानुसरण करवाक कारणं तित्तित्तुत्त विवग्ग सुभाषति विवग्गपत्ति
के" एतित्तो अभिनिव वगदेवक उपसि देव । मारम्भ के वगदेव वगदा विवग्गपत्तिपत्ति
उप वी- एवग्गपत्ति के विवग्ग-एव । वा विवग्गपत्ति पदार्थलोका वाग वगदेव एव
लोकाके केव वगदेवित्तु वगदेव । ए तित्त विवग्गपत्ति वाग वी-एवग्गपत्ति । वगदेव
उपदेवपत्ति पत्ति वा वगदेव पत्ति देव विवग्गपत्ति वगदेवपत्ति तित्त वगदेव

नहि, हुनक लीचिलता नहीछि मेक । माय, बापयि, हर्ष, बाप, पयदेव मिलका
हँ विद्यापति प्रभावित चेन कहि, कामकमे किन्तुतयाव नम्र मेसाह ।

कि कनेतसय सारथेन तबहुलाप्यनगिनी कनेन बापछी वस्यन मान्योति
विमलरस ।

हँ तीन तय बरष पञ्चालु गोविन्ददास विद्यापति केँ निजनिजिल
पदावलि देन—

कविपति विद्यापतिप्रतिमाने

बाक नीतल्लगिचि चौराओल गोविन्द गोविं सरलरस बले

बुझने बाझ कस जालतिबाओ

लाकर तार सारथ सँचल बान्हल रीत कतहु परमाओ

X

X

X

आनमे बाह्य करम बिहा

जे मान्य बनगदि हरिलाल विद्यापति कवि तेहा ।

गोविन्द दासो विद्यापतिक पदावलीक हेतु 'गीत' शब्दक प्रयोग काल
मुदा हुनका अन्धियन नबनेक नहि, नाचिपति कहल । संभवि एतु इहयक उपादान
काल केँ विद्यापति हमस्त उपलब्ध कारितवाणीक—[Kali's history] व—सहि
सँचिल बाप रीत बलबोलेन ।

कविता भस मायुर्व कविपति भ लल्लवि

अकाली बुझसी बनें बबोकेलि न बुझल ।

हमस्त समकालीन पण्डित, कवि एवं रसिकक हेतु विद्यापति कनेँ समिनव
कयदेव चल होएताह मुदा गरबली कलि लोकभित केतु नर काम्य पञ्चमहाक अन्ध-
दाताक रूप मे कविपति रिद्ध भेलाह । शैलकत अन्धकारक काव्य परम्परा हुन्य बाए
हेत । विद्यापति द्वारा अस्तित्व बाध्य परम्परा विमलुतिन विकसित होएत कवीन्द्र
सीन्द्र मे जगन हरिपति बाओल । एहि दृष्टि से उतर भारतक प्रचलित भाषा
शास्त्रिय मे विद्यापतिक बीह स्थान सँघि केँ सांख्यिक संस्कृत साहित्य मे ।
कियवलि कवि केँ वास्तवीक भूँह न बनायाव निःसृत—

आ निबाव प्रतिपदास्तथामयः क्षतघनी मयः

चरकोष निष्पुण्ड्रेक बबरीः कामभीहितम्,

हँ संस्कृतक बकार छुहल । विद्यापतिक भूँह न कोन पय पतिने बहुरास्य लकर
हमाल नहि । पालु केँ कोनी पय बहुपाण्य होखओ, चकर भारतक भाक क्षमक
हेतु ओ बनेओ बाए येन । शायः मीह प्यान केँ राखि गोविन्ददास-विद्यापति केँ कवि-
पति कहल ।

X

X

X

पाछादास हम्मलक लम्हकेँ सेँ वकाल बंसाव मे भव मान्यन मेन, मायुकाबाक
हलि नम्र बपुराव पापल मेन, शैलकृतिक मूल्यक बबोकेन होएत सायल, विद्यापति-

वर्षावासक महत्त्व भविष्य में : वास्तव्य शिक्षक विज्ञानशुद्धी में विद्युत्प्रतिष्ठान एक
विशेष रूप में शिक्षित समुदायक समय लाइवित में । वैज्ञानिक रूप में विद्युत्प्रतिष्ठान
मुख्यतः जोड़कमें में रहताह—कम्प्यूटि कम्प्यूट प्रणाली नियमों । यंत्रों में वास्तव्य
कृत्रिम कारणों विद्युत्प्रतिष्ठान में वहिर्मुख में व्यापक रूप में वास्तव्य में किन्ना
कम्प्यूटि कम्प्यूटि (Drawing) में उपस्थित में ।

कला विद्यापति कृष्णजीदास जी हैं कला सेतो—सीढ़—बापरन में होयव लागल । अनुसन्धान में साधारण विद्वान तथा सातकर्ता कम बोधवान नहि कहलनि । अंगरेजीक रोमांटिक साहित्यक अनुशीलन में विद्यापतिक रत्नचन्द्रनक हेतु एक अनुकूल वातावरणो उत्पन्न आरु बैल छल । बाबतु भरि रसोभनायक प्रदर नहि चेन जा भगवान विद्यापति बनलाक कवि मानल जाइत रहलाह । विद्यापति संवाही लोकनिक भाषे पर रहलाह । बाबतु बाबतु कितु कमय लागल—सदा ही बसले जाति जा बनले रात । विद्यापति पर ऐतिहासिक दृष्टि में कदाचित्ही तत्वे अधिकार छनि कहवा मैबिसक । कां भव भव तक मैबिस ही अधिक संवातिवे विद्यापति के भवने रहलाह अकर प्रभाव परावर्तीक उपलब्ध पाठ पर स्पष्ट भलि ।

सैबिसीक कवि मित्र मैत्रांक समस्त सैबिस बहुत दिन तक विद्यापतिक साथ रहबाक अविरल मित्र रहि गएन । व्यवहारक बात अबाध सैबिसानी साथ करन कष्ट में रहने रहबोह । बाध्यक निबन्ध के सैबिस विद्यापति पदावलीक एक सीक संस्करण तक सहि बहार कए सकलाह । आरम्भ में सैबिसीतरे बिहार के विद्यापति पदावलीक सीक वा अध्याय संस्करण बहार कएल पर संस्करण सभक मध्य प्रायः ई मित्र करन छल के विद्यापति हिन्दीक कवि छलाह, के । सैबिसी हिन्दीक एक बोधी बौक । सैबिसी के आग्रह कन्दा आज समय में अबाध जाएत । मुदा सामाजिकक कुदृष्टिक कारणे औपचारिकक उपेक्षाक कारणे आग्रह कुठित पर देन । सम्पादनक समय में बीसस सालकीक द्वितीय-तृतीय दशक तक सैबिसीक बनेक एक पत्रिका बहराएल रहल मुदा सैबिसीक आजीव साहित्यक आत्मीय सम्बन्धन लभक मय साहित्यक सुवर्णक दिना के कोनो संबन्धन अपास रहि भेल । संबन्धन लभल हमरा बनेल औपचारिक दृष्टीक तृतीय दशक में आरम्भ भेल—सैबिसी साहित्य-पत्रक उपाख्य है । अहिना से कदमनेल विद्यापति पर कनेक भेल—निबन्ध, जीवित निलाल भेल अथि । विद्यापतिक बंस, व्यक्तित्व, विद्यापति, मुदा कोन पर बनेक सुताए भेल निलाल भेल अथि । विद्यापति के अन्त कवि मित्र करबाक उपास भेल अथि—सैबिसी, सैबिस-सैबिसीक औरक हेतु । अबाध समाधानीय मुदा साहित्यिक, साहित्य बाण । विद्यापति सैबिस बनाए कि बगानी, सब छलाह कि जात, बल बनाह विरलिक जाति बने महत्वपूर्ण अवधि किन्तु पदावलीक

